2

अर्थशास्त्र की परिभाषा, प्रकृति एवं क्षेत्र

[DEFINITION, NATURE AND SCOPE OF ECONOMICS]

अर्थशास्त्र की परिभाषा
(DEFINITION OF ECONOMICS)

अर्थशास्त्र एक विकासशील शास्त्र है। समय-समय पर विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने इसकी अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं। वास्तव में, अर्थशास्त्र की इतनी अधिक परिभाषाएं हैं कि उन्हें निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है।

(1) **धन सम्बन्धी परिभाषा** (Wealth Definition)

आधुनिक अर्थशास्त्र के पिता एडम स्मिथ ने 1776 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "*An enquiry into the Nature and Causes of Wealth of Nations*" में अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है। "अर्थशास्त्र राष्ट्रों के धन की प्रकृति तथा कारणों की खोज है।"[1] इस परिभाषा के अनुसार, अर्थशास्त्र के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि धन क्या है, धन की मात्रा को कैसे बढ़ाया जा सकता है, आर्थिक विकास के लिए धन की बचत तथा निवेश कौन-से तत्वों पर निर्भर करता है। धन से अभिप्राय सब प्रकार की भौतिक वस्तुओं से है।

आलोचना (Criticism)—अर्थशास्त्र की धन सम्बन्धी परिभाषा दोषपूर्ण है। इस परिभाषा के अनुसार अर्थशास्त्र में मनुष्य के कल्याण के स्थान पर केवल धन का अध्ययन किया जाता है, परन्तु धन तो मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने का केवल साधन मात्र है। धन को मनुष्य से अधिक महत्व देना अनुचित है, इसलिए कार्लाईल, रस्किन, मौरिस आदि लेखकों ने अर्थशास्त्र की धन सम्बन्धी परिभाषा के कारण इसकी आलोचना की है। उन्होंने इसे दुखदायी विज्ञान (Dismal Science) कह कर इसकी निन्दा की है।

(2) **भौतिक कल्याण सम्बन्धी परिभाषा** (Material Welfare Definition)

डॉ. मार्शल ने 1890 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "*Principles of Economics*" में अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है। "अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय के सम्बन्ध में मानव जाति का अध्ययन है। यह व्यक्तिगत तथा सामाजिक कार्यों के उस भाग का अध्ययन करता है जिसका घनिष्ठ सम्बन्ध कल्याण प्रदान करने वाले भौतिक पदार्थों की प्राप्ति तथा उनका उपयोग करने से है।"[2] इस परिभाषा के अनुसार अर्थशास्त्र में सामाजिक मनुष्य के उन कार्यों का अध्ययन किया जाता है, जिन्हें वे अपना कल्याण बढ़ाने वाले भौतिक पदार्थों को प्राप्त करने तथा उनका उपयोग करने के लिए करते हैं। अर्थशास्त्र में अभौतिक पदार्थों या सेवाओं का अध्ययन नहीं किया जाता। जीवन के साधारण व्यवसाय से अभिप्राय मनुष्य के आर्थिक कार्यों से है। आर्थिक कार्य वे कार्य हैं जिनका सम्बन्ध धन कमाने तथा खर्च करने से है।

आलोचना (Criticism)—रोबिन्स ने इस परिभाषा की कई कारणों से आलोचना की हैं। जैसे—(1) अर्थशास्त्र में सभी मनुष्यों के आर्थिक कार्यों का अध्ययन किया जाता है, चाहे वे समाज में रहते हो अथवा

1 Economics is an enquiry into the nature and causes of wealth of nations. —*Adam Smith*

2 Economics is a study of mankind in the ordinary business of life. It examines that part of individual and social action which is most closely connected with the attainment and use of material requisites of well being. —*Marshall*

Scanned by PDF Scanner

समाज से बाहर एकांत में रहते हों। (2) अर्थशास्त्र में सभी प्रकार के सीमित साधनों से सम्बन्धित आर्थिक कार्यों का अध्ययन किया जाता है, चाहे वे भौतिक हों अथवा अभौतिक। (3) अर्थशास्त्र में सभी प्रकार के आर्थिक कार्यों का अध्ययन किया जाता है, चाहे उनसे कल्याण में वृद्धि हो अथवा न हो।

(3) दुर्लभता सम्बन्धी परिभाषा (Scarcity Definition)

रोबिन्स ने 1932 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "*An essay on the Nature and Significance of Economics Science*" में अर्थशास्त्र की दुर्लभता सम्बन्धी परिभाषा दी है। रोबिन्स के अनुसार, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो विभिन्न उपयोगों वाले सीमित साधनों तथा उद्देश्यों से सम्बन्ध रखने वाले मानवीय व्यवहार का अध्ययन करता है।"[1] अतएव प्रसिद्ध अर्थशास्त्री रोबिन्स के अनुसार, अर्थशास्त्र में मनुष्यों के उन कार्यों का अध्ययन किया जाता है, जिन्हें वे अपनी असीमित आवश्यकताओं (Ends) को पूरा करने वाले सीमित साधनों (Scarce Means) की प्राप्ति के लिए करते हैं। ये साधन न केवल सीमित ही होते हैं अपितु इनके वैकल्पिक प्रयोग (Alternative Uses) भी होते हैं। इस प्रकार अर्थशास्त्र (1) असीमित आवश्यकताओं को पूरा करने वाले, (2) सीमित साधनों जिनके विभिन्न या वैकल्पिक उपयोग होते हैं, (3) के चयन का अध्ययन है।

आलोचना (Criticism)—डरबिन, फ्रेजर, ऐली आदि अर्थशास्त्री इस परिभाषा की भी आलोचना करते हैं। उनके अनुसार **रोबिन्स** ने अर्थशास्त्र को केवल चयन या मूल्य निर्धारण का शास्त्र बना दिया है। इसका मनुष्य के कल्याण तथा उसकी आर्थिक समस्याओं को सुलझाने से कोई सम्बन्ध नहीं रखा गया है। यह अर्थशास्त्र की एक अव्यावहारिक, जटिल तथा अगत्यात्मक परिभाषा है।

मार्शल तथा रॉबिन्स की परिभाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन
(COMPARISON BETWEEN MARSHALL'S AND ROBBINS'S DEFINITIONS)

मार्शल व रॉबिन्स की परिभाषाओं का अध्ययन करने से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं :

(I) कुछ बातें दोनों परिभाषाओं में समान रूप से पायी जाती हैं और (II) कुछ बातों में दोनों परिभाषाओं में भारी अन्तर है। इन दोनों बातों को ध्यान में रखते हुए मार्शल व रॉबिन्स की परिभाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन निम्न प्रकार है :

(I) समानताएं (Similarities)

मार्शल व रॉबिन्स की परिभाषाओं में निम्नांकित समानताएं पायी जाती हैं :

(1) **मनुष्य को प्रमुख स्थान देना** (More importance to man)—प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को धन का शास्त्र (science of wealth) माना था जिसका अर्थ यह लगाया जाने लगा कि व्यक्ति धन के लिए है, न कि धन व्यक्ति के लिए। इस प्रकार अर्थशास्त्र का मुख्य विषय व्यक्ति न होकर धन माना गया। मार्शल ने अपनी परिभाषा में, '**मानव जाति**' (Mankind) तथा रॉबिन्स ने '**मानव व्यवहार**' (Human Behaviour) जैसे शब्दों का प्रयोग करके, यह स्पष्ट किया कि अर्थशास्त्र में धन की अपेक्षा व्यक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है।

(2) '**धन**' **और** '**सीमित साधन**' **शब्दों में काफी हद तक समानता** (Use of the word wealth and scarcity)—मार्शल ने अर्थशास्त्र की परिभाषा में 'धन' शब्द का प्रयोग किया है, जबकि रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र का सम्बन्ध 'सीमित साधनों' से जोड़ा है। इसलिए दोनों के कथनों में समानता है, क्योंकि धन, उस वस्तु या सेवा को कहा जाता है जिसकी पूर्ति सीमित होती है। इसलिए रॉबिन्स का 'सीमित साधन' सम्बन्धी कथन मुद्रा का ही पर्याय है।

(3) **विज्ञान मानना** (Economics is a science)—दोनों ही विद्वान अर्थशास्त्र को विज्ञान मानते हैं। अतः इस विषय पर मार्शल और रॉबिन्स के विचारों में समानता है।

(4) **साधनों के मितव्ययितापूर्ण प्रयोग और अधिकतम-कल्याण सम्बन्धी विचार समान** (Concept of maximum satisfaction and welfare)—रॉबिन्स ने बताया कि साधनों का प्रयोग मितव्ययिता से होना चाहिए जिससे कि उत्पादन या सन्तुष्टि अधिकतम हो सके। मार्शल ने इसी बात को अधिकतम-कल्याण या मानव-कल्याण के रूप में व्यक्त किया है।

1 Economics is a science that studies human behaviour as a relationship between ends and scarce means which have alternative uses. —*Robbbins*

Scanned by PDF Scanner

(II) **असमानताएं** (Differences)

उपर्युक्त कारणों से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि मार्शल व रॉबिन्स की परिभाषाओं में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। कुछ महत्वपूर्ण बातें ऐसी हैं, जो दोनों के विचारों को अलग-अलग कर देती हैं। इन प्रमुख बातों को नीचे दिया जा रहा है :

अन्तर का आधार		मार्शल की परिभाषा	रॉबिन्स की परिभाषा
1.	**वर्ग भेद**	मार्शल ने अर्थशास्त्र की परिभाषा में मनुष्य की क्रियाओं को आर्थिक तथा अनार्थिक, साधारण तथा असाधारण भागों में विभाजित किया है। इस प्रकार उनकी परिभाषा वर्गकारिणी (classificatory) है।	प्रो. रॉबिन्स की परिभाषा वर्गीकृत न होकर विश्लेषणात्मक (analytical) है। उन्होंने अर्थशास्त्र में व्यक्ति (सामाजिक हो या एकांतवासी, साधारण हो या असाधारण) की प्रत्येक क्रिया को शामिल किया है और उसका अध्ययन चुनाव पहलू की दृष्टि से होता है।
2.	**सरलता**	मार्शल की परिभाषा अत्यन्त सरल और स्पष्ट है।	प्रो. रॉबिन्स की परिभाषा अपेक्षाकृत जटिल है।
3.	**अध्ययन का क्षेत्र**	मार्शल ने अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान माना है। उनके अनुसार अर्थशास्त्र में केवल उन्हीं व्यक्तियों का अध्ययन किया जायेगा जो समाज में रहते हों। समाज से बाहर रहने वाले व्यक्तियों का अर्थशास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं है।	प्रो. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा मानव विज्ञान माना है। उनके अनुसार व्यक्ति चाहे समाज में रहता हो या समाज से बाहर, यदि वह चुनाव की समस्या से प्रभावित होता है, तो उसका अध्ययन अर्थशास्त्र में किया जायेगा।
4.	**कल्याण का सम्बन्ध**	मार्शल ने अर्थशास्त्र को मानव कल्याण का शास्त्र माना है। उनके अनुसार अर्थशास्त्र का अन्तिम लक्ष्य मानव-कल्याण में वृद्धि करना है।	प्रो. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र का सम्बन्ध मानव कल्याण से स्थापित नहीं किया है।
5.	**विज्ञान व कला**	मार्शल ने अर्थशास्त्र को विज्ञान और कला दोनों माना है। उनके अनुसार अर्थशास्त्र में क्या है? (what is?) के साथ-साथ क्या होना चाहिए (what ought to be?) का भी अध्ययन होता है।	प्रो. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को केवल वास्तविक विज्ञान माना है। उनका मत है कि अर्थशास्त्र में केवल क्या है? (what is?) का अध्ययन होता है, क्या होना चाहिए (what ought to be?) का नहीं।
6.	**अर्थशास्त्र का उद्देश्य**	मार्शल ने अर्थशास्त्र का उद्देश्य मनुष्य का भौतिक कल्याण माना है।	प्रो. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र के उद्देश्य में अकेले भौतिक कल्याण को शामिल नहीं किया है। उन्होंने मनुष्य के सुख-दुख, कल्याण-अकल्याण तथा हित-अहित में किसी प्रकार का भेद नहीं किया है।

(4) **इच्छाओं के लोप सम्बन्धी परिभाषा** (Definition on Wantlessness)

भारतीय दर्शन से प्रभावित होकर **जे. के. मेहता** (J. K. Mehta) ने अर्थशास्त्र की निम्न परिभाषा दी है: **"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानवीय आचरण का, इच्छारहित अवस्था में पहुंचने के एक साधन के रूप में अध्ययन करता है।"**

मेहता द्वारा दी गयी परिभाषा की व्याख्या (Explanation)

प्रो. मेहता द्वारा दी गयी परिभाषा की व्याख्या निम्न तथ्यों के आधार पर की जाती है :

(i) **अधिकतम सुख इच्छारहित अवस्था में निहित है।**

(ii) **व्यक्ति का अन्तिम लक्ष्य सुख प्राप्त करना है।**

(iii) **व्यक्ति के समस्या इच्छाओं के चुनाव की समस्या होती।**

(iv) **मानव व्यवहार** जो कि अर्थशास्त्र के अध्ययन का विषय है, मस्तिष्क की बेचैनी अथवा मानसिक असन्तुलित (unbalanced) दशा का परिणाम होता है।

(v) मनुष्य हमेशा मानसिक सन्तुलन को बनाये रखने का भरसक प्रयत्न करता है।

Scanned by PDF Scanner

प्रो. मेहता की परिभाषा की आलोचना (Criticism of Prof. Mehta's Definition)

प्रो. मेहता की परिभाषा की निम्नलिखित आलोचनाएं हैं :

(1) **इच्छारहित मानव की कल्पना निराधार है।**

(2) **प्रो. मेहता के विचार स्व-विरोधी हैं।**

(3) **अधिकतम सन्तुष्टि की धारणा का गलत है।**

(4) **अर्थशास्त्र को धर्म व दर्शन के साथ जोड़ना गलत है।**

(5) **अर्थशास्त्र को पूर्णतया आदर्श विज्ञान मानना गलत है।**

(5) **विकास-केन्द्रित परिभाषा** (Growth-Oriented Definition)

आधुनिक अर्थशास्त्री जैसे नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रो. सैम्युअलसन, पीटरसन, फर्गूसन आदि के अनुसार, "अर्थशास्त्र वह शास्त्र है जिसमें मनुष्य के उन कार्यों का अध्ययन किया जाता है जो वे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए सीमित साधनों के उचित प्रयोग के सम्बन्ध में करते हैं।" इन अर्थशास्त्रियों ने अपनी परिभाषा में मार्शल तथा रोबिन्स दोनों की परिभाषाओं को शामिल किया है। इनके अनुसार अर्थशास्त्र का सम्बन्ध सीमित साधनों के कुशलतम बंटवारे तथा उपयोग से है जिसके फलस्वरूप आर्थिक विकास की दर को तेज किया जा सके तथा सामाजिक कल्याण में वृद्धि की जा सके।

नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री **सैम्युअलसन** के अनुसार, "अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि व्यक्ति तथा समाज किस प्रकार मुद्रा के माध्यम से अथवा इसके बिना विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन के लिए वैकल्पिक उपयोगों वाले दुर्लभ साधनों का प्रयोग करते हैं और इन पदार्थों को वर्तमान तथा भविष्य के उपभोग के लिए समाज के विभिन्न लोगों तथा वर्गों के बीच बांटते हैं। यह साधनों के बंटवारे में किए जाने वाले सुधारों के लाभों व लागतों का विश्लेषण करता है।"

उचित परिभाषा

अर्थशास्त्र की मुख्य परिभाषाओं में कोई-न-कोई दोष है। इन परिभाषाओं के मिश्रण से ही हम अर्थशास्त्र की एक अधिक उचित परिभाषा की रचना कर सकते हैं।

हम जानते है कि एडम स्मिथ की परिभाषा से धन, मार्शल की परिभाषा से कल्याण, रोबिन्स की परिभाषा से दुर्लभता और सैम्युअलसन की परिभाषा से आर्थिक विकास रूपी धारणाओं को लेकर अर्थशास्त्र की एक अच्छी परिभाषा की इन शब्दों में रचना की जा सकती है, **"अर्थशास्त्र वह शास्त्र है जिसमें मनुष्य की आवश्यकताओं की अधिकतम संतुष्टि करने या कल्याण बढ़ाने तथा आर्थिक विकास के लिए अनेक उपयोगों वाले सीमित साधनों के कुशलतम उपभोग, उत्पादन तथा विनिमय से सम्बन्धित कार्यों का अध्ययन किया जाता है।"**

अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics)

प्रत्येक शास्त्र की प्रकृति यह बताती है कि वह विषय विज्ञान है, अथवा कला या विज्ञान और कला दोनों ही है। अर्थशास्त्र की प्रकृति के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि यह एक वास्तविक तथा आदर्शात्मक विज्ञान और कला दोनों ही है।

अर्थशास्त्र विज्ञान है (Economics is a Science)

प्रो. सैलिगमैन के अनुसार, विज्ञान दो प्रकार का हो सकता है : (1) सामाजिक विज्ञान (Social Scienec) तथा (2) प्राकृतिक विज्ञान (Natural Science)। अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, क्योंकि इसका सम्बन्ध मनुष्यों से है। जबकि भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र आदि प्राकृतिक विज्ञान है। अर्थशास्त्र के **सामाजिक विज्ञान** होने के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं :

(i) **क्रमागत अध्ययन** (Systematic Study)—एक सामाजिक विज्ञान के रूप में, अर्थशास्त्र में मनुष्य के व्यवहार का क्रमागत अध्ययन किया जाता है। इसका केन्द्र-विंदु है। (i) उपभोक्ताओं की अधिकतम संतुष्टि, (ii) उत्पादकों के अधिकतम लाभ, तथा (iii) समाज के अधिकतम सामाजिक कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त करना।

(ii) **वैज्ञानिक नियम** (Scientific Laws)—अर्थशास्त्र के नियम जैसे—मांग का नियम, पूर्ति का नियम, आदि वैज्ञानिक नियम है। ये नियम विभिन्न चरों के कारण तथा परिणाम (Cause and Effect) में सम्बन्ध स्थापित करते हैं। मांग के नियम से प्रकट होता है किसी वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी मांग कम

Scanned by PDF Scanner

हो जायेगी। इस प्रकार यह नियम कीमत में होने वाले परिवर्तन (जो कारण है) के फलस्वरूप मांग में होने वाले परिवर्तन (जो प्रभाव हैं) में विपरीत सम्बन्ध स्थापित करता है।

(iii) **नियमों की सत्यता** (Validity of the Laws)—प्रत्येक विज्ञान अपने नियमों की सत्यता की जांच भी करता है। अर्थशास्त्र के मांग के नियम की सत्यता की जांच की जा सकती है। अर्थशास्त्र प्राकृतिक विज्ञान जितना निश्चित नहीं है, परन्तु यह भी एक विज्ञान है। यह एक सामाजिक विज्ञान एवं कला है जो आर्थिक समस्याओं एवं नीतियों का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करता है। इसका उद्देश्य एक अर्थव्यवस्था की विभिन्न आर्थिक संस्थाओं में वृद्धि तथा स्थिरता प्रदान करता है।

अर्थशास्त्र —एक वास्तविक तथा आदर्शात्मक विज्ञान
(ECONOMICS—A POSITIVE AND NORMATIVE SCIENCE)

अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान के रूप में
(ECONOMICS AS A POSITIVE SCIENCE)

वास्तविक विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें किसी विषय की सही तथा वास्तविक स्थिति का अध्ययन किया जाता है। एक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र के कथन वास्तविक कथन होते हैं। वास्तविक कथन वे कथन है जिनसे ज्ञात होता है कि क्या है? (What is?) क्या था? (What was?) तथा विशेष परिस्थितियों में क्या होगा? (What ought to be?) इन कथनों की जांच की जा सकती है। हम इन कथनों की तथ्यों के आधार पर जांच करके यह नतीजा निकाल सकते हैं कि ये कथन सही है या गलत है। ये कथन किसी प्रकार की सलाह नहीं देते। वास्तविक अर्थशास्त्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि आवश्यकताएं असीमित हैं, उन्हें पूरा करने वाले अधिकतर साधन दुलर्भ हैं। इन साधनों के अनेक उपयोग हैं। ये सभी बातें वास्तविक हैं। एक वास्तविक विज्ञान तथ्यों के बारे में किसी प्रकार का सुझाव नहीं देता है।

अर्थशास्त्र के जिस भाग में वास्तविक कथनों का अध्ययन किया जाता है उसे वास्तविक अर्थशास्त्र (Positive Economics) कहा जाता है, परन्तु वास्तविक कथन वास्तविक तथ्य हो भी सकते हैं और नहीं भी, परन्तु निश्चित रूप से इन कथनों के सत्य अथवा असत्य होने के बारे में जांच की जा सकती है।

अर्थशास्त्र एक आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में
(ECONOMICS AS A NORMATIVE SCIENCE)

अनेक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जैसे मार्शल, पीगू, आदि यह मानते हैं कि अर्थशास्त्र एक आदर्शात्मक विज्ञान भी है। आदर्शात्मक विज्ञान वह विज्ञान है जिसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि क्या होना चाहिए? (What ought to be?) इसका उद्देश्य आदर्शों या लक्ष्यों को निर्धारित करना है। यह विज्ञान समस्याओं को सुलझाने के लिए सुझाव भी देता है। उदाहरण के तौर पर एक आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र कई प्रकार के सुझाव देगा जैसे—कीमतों में स्थिरता पाई जानी चाहिए, आय का समान वितरण होना चाहिए, धनी लोगों को अधिक कर देने चाहिए तथा निर्धन लोगों को अधिक मजदूरी मिलनी चाहिए, आदि। एक आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र के कथन भी आदर्शात्मक होते हैं। ये कथन मूल्यांकन (Value Judgement) करते हैं। ये किसी नीति के सम्बन्ध में सलाह देते हैं कि यह ठीक है या गलत है।

अर्थशास्त्र के जिस भाग में आदर्शात्मक कथनों का अध्ययन किया जाता है उसे आदर्शात्मक अर्थशास्त्र (Normative Economics) **कहा जाता है। आदर्शात्मक कथनों की तथ्यों के आधार पर जांच नहीं की जा सकती।**

संक्षेप में अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान भी है और आदर्शात्मक विज्ञान भी है।

अर्थशास्त्र कला के रूप में (Economics as an Art)

किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग कला कहलाता है। (Art is the practical application of knowledge for achieving some definite aim) आप जानते हैं कि भारत में बेरोजगारी पाई जाती है। यह सूचना अर्थशास्त्र के वास्तविक विज्ञान होने से प्राप्त होती है। आप यह भी जानते हैं कि सरकार का लक्ष्य है कि बेरोजगारी दूर होनी चाहिए तथा पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त होनी चाहिए। यह सूचना आदर्शात्मक विज्ञान से प्राप्त होती है। पूर्ण रोजगार के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सरकार आर्थिक नियोजन का मार्ग अपनाती है।

Scanned by PDF Scanner

नियोजन का मार्ग एक कला है, क्योंकि निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र एक कला भी है। जे. एम. केन्ज ने कला के स्थान पर व्यावहारिक अर्थशास्त्र (Applied Economics) शब्द का प्रयोग किया है। आधुनिक अर्थशास्त्री 'कला' के लिए '**आर्थिक नीति**' (Economic Policy) शब्द का प्रयोग करते हैं।

अन्त में, **अर्थशास्त्र विज्ञान तथा कला दोनों ही है।** प्रो. चैपमेन ने ठीक ही कहा है कि, "अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है जो आर्थिक तथ्यों की वास्तविक स्थिति से सम्बन्धित है और एक कला है जो इस प्रकार के उपाय और साधन ढूंढता है जिनसे इच्छित लक्ष्य प्राप्त किये जा सकें।"[1]

अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री/विषय-वस्तु
(SUBJECT MATTER OF ECONOMICS)

सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री/विषय-वस्तु के अन्तर्गत उन सभी आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जो असीमित आवश्यकताओं तथा सीमित साधनों के कारण की जाती है।

आर्थिक क्रिया (Economic Activity)

आर्थिक क्रिया वह क्रिया है जिसका सम्बन्ध उन सभी वस्तुओं के उत्पादन, उपभोग तथा निवेश से है जिनमें उपयोगिता होती है जो दुर्लभ है तथा जिनका विनिमय किया जा सकता है।

इस दृष्टि से अर्थशास्त्र की विषय सामग्री के अन्तर्गत निम्न आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है :

(1) **उत्पादन** (Production)—उत्पादन वह आर्थिक क्रिया है जिसका सम्बन्ध वस्तुओं तथा सेवाओं की उपयोगिता या मूल्य में वृद्धि करने से है। बिस्कुट बनाने की क्रिया उत्पादन है। नदी के किनारे से बालू को शहर में ले जाकर बेचना भी उत्पादन है। उत्पादन के चार मुख्य साधन है : (i) भूमि, (ii) श्रम, (iii) पूंजी तथा (iv) उद्यमी।

(2) **उपभोग** (Consumption)—उपभोग वह आर्थिक क्रिया है जिसका सम्बन्ध, व्यक्तिगत तथा सामूहिक आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष सन्तुष्टि के लिए वस्तुओं तथा सेवाओं की उपयोगिता के उपभोग से है। कपड़ा पहनना, रोटी खाना, डॉक्टर की सेवाएं आदि क्रियाएं उपभोग हैं।

(3) **निवेश** (Investment)—निवेश वह आर्थिक क्रिया है जिसका सम्बन्ध भविष्य में वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन के लिए पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादन से है। निवेश द्वारा मनुष्य की आवश्यकताएं अप्रत्यक्ष रूप से सन्तुष्ट होती हैं। उदाहरण के लिए, कपड़े सीने की सिलाई मशीन का उत्पादन निवेश है। यह कमीजों की सिलाई करके मनुष्य की आवश्यकताओं को अप्रत्यक्ष रूप से सन्तुष्ट करती है।

(4) **विनिमय** (Exchange)—विनिमय वह क्रिया है जिसका सम्बन्ध किसी वस्तु या उत्पादन के साधन के क्रय-विक्रय से है। इनका क्रय-विक्रय अधिकतर मुद्रा द्वारा किया जाता है। इस क्रिया को कीमत निर्धारण (Price Determination) भी कहा जाता है। कीमत निर्धारण को दो भागों में बांटा जाता है।

(i) **वस्तु कीमत निर्धारण** (Product Pricing)—इसका सम्बन्ध बाजार की विभिन्न दशाओं जैसे—पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, अपूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं की कीमत के निर्धारण से है।

(ii) **साधन कीमत निर्धारण** (Factor Pricing)—इसका सम्बन्ध उत्पादन के साधनों की कीमत अर्थात् भूमि की कीमत लगान, श्रम की कीमत - मजदूरी, पूंजी की कीमत-ब्याज तथा उद्यमी को प्राप्त होने वाले लाभ के निर्धारण से है। इस क्रिया को वितरण (Distribution) भी कहा जाता है। प्रो. चैपमेन ने इस सम्बन्ध में ठीक ही कहा है कि "अर्थशास्त्र, ज्ञान की वह शाखा है जो धन के उपभोग, उत्पादन, विनिमय तथा वितरण का अध्ययन करती है।"

1 **Economics is a positive science dealing with economic facts and an art finding out of the ways and means by which the desired ends can be reached.** —*Prof. Chapman*

Scanned by PDF Scanner

राजस्व या सार्वजनिक वित्त (Public Finance)

राजस्व आधुनिक समय में सम्पूर्ण आर्थिक प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग है। इसके अन्तर्गत सार्वजनिक आय, सार्वजनिक व्यय, सार्वजनिक ऋण, बजट, घाटे की वित्त व्यवस्था, राजकोषीयनीति से सम्बन्धित समस्त बातों का अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार, अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री के अन्तर्गत उपभोग, उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा सार्वजनिक वित्त से सम्बन्धित समस्याओं तथा सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।

आधुनिक अर्थशास्त्री उपर्युक्त दृष्टिकोण के प्रति अपनी सहमति नहीं व्यक्त करते। उन्होंने अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री को दो वर्गों में विभाजित किया है—(1) **सूक्ष्म या व्यष्टि** (Micro) **अर्थशास्त्र या कीमत सिद्धान्त** (2) **व्यापक या समष्टि** (Macro) **अर्थशास्त्र या आय तथा रोजगार का सिद्धान्त**।

महत्वपूर्ण प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अर्थशास्त्र को परिभाषित कीजिए।
2. रॉबिन्स तथा मार्शल की परिभाषाओं की तुलना करते हुए स्पष्ट कीजिए कि कौन-सी परिभाषा उपयुक्त है?
3. अर्थशास्त्र की मार्शल की परिभाषा की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
4. अर्थशास्त्र की विभिन्न परिभाषाओं की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।
5. अर्थशास्त्र की विषय सामग्री का वर्णन कीजिए।
6. अर्थशास्त्र की प्रकृति का वर्णन कीजिए।
7. अर्थशास्त्र की प्रकृति के बारे में बताइए। 'अर्थशास्त्र एक विज्ञान है।' इसके पक्ष में तर्क दीजिए।
8. अर्थशास्त्र विज्ञान है अथवा कला। इस सम्बन्ध में विचार व्यक्त कीजिए।
9. 'अर्थशास्त्र विज्ञान तथा कला दोनों हैं? क्या आप इससे सहमत हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अर्थशास्त्र की एक उपयुक्त परिभाषा दीजिए।
2. 'अर्थशास्त्र धन सम्बन्धी विज्ञान है।' स्पष्ट कीजिए।
3. अर्थशास्त्र की मार्शल की परिभाषा को समझाइए।
4. मार्शल द्वारा दी गई अर्थशास्त्र की परिभाषा की कमियां बताइए।
5. राबिन्स की परिभाषा की विशेषताएं बताइए।
6. राबिन्स की परिभाषा की कमियां बताइए।
7. राबिन्स तथा मार्शल की परिभाषाओं की तुलना कीजिए।
8. अर्थशास्त्र की विकास सम्बन्धी परिभाषा बताइए।
9. अर्थशास्त्र के क्षेत्र की व्याख्या कीजिए।
10. अर्थशास्त्र एक विज्ञान है। इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए।
11. अर्थशास्त्र एक आदर्श विज्ञान है, स्पष्ट करें।
12. अर्थशास्त्र विज्ञान तथा कला दोनों है, स्पष्ट करें।
13. अर्थशास्त्र का क्षेत्र क्या है?
14. क्या अर्थशास्त्र एक विज्ञान है?
15. अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री के पांच विभाग कौन से हैं?

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. एडम स्मिथ के अनुसार अर्थशास्त्र विज्ञान है :

   (A) धन का
   (B) वास्तविकता का
   (C) आंकड़ों का
   (D) इनमें से सभी का

2. कल्याण सम्बन्धी परिभाषा किस अर्थशास्त्री ने दी है :

   (A) मार्शल ने
   (B) स्मिथ ने
   (C) रिकार्डो ने
   (D) रॉबिन्स ने

Scanned by PDF Scanner

3. किस अर्थशास्त्री ने धन की अपेक्षा मानव कल्याण को अधिक महत्व प्रदान किया है :
(A) सैम्युलसन ने (B) मार्शल ने
(C) जे. के. मेहता ने (D) रॉबिन्स ने

4. "राजनीतिक अर्थशास्त्र का विज्ञान सबसे अधिक विचित्र तथा सबसे कम विश्वसनीय है।" यह कथन है :
(A) रस्किन का (B) माल्थस का
(C) मार्शल का (D) पीगू का

5. इच्छाओं के लोप सम्बन्धी परिभाषा के प्रतिपादक थे :
(A) रॉबिन्स (B) मेहता
(C) पीगू (D) मार्शल

6. अर्थशास्त्र विज्ञान है क्योंकि यह :
(A) कारण एवं परिणाम के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है।
(B) सार्वभौमिक नियमों का प्रतिपादन करता है।
(C) वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करता है।
(D) उपर्युक्त सभी।

7. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को माना :
(A) वास्तविक विज्ञान (B) आदर्श विज्ञान
(C) (A) व (B) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

8. अर्थशास्त्र को आदर्श-विज्ञान किसने नहीं माना :
(A) रॉबिन्स (B) मार्शल
(C) पीगू (D) कीन्स

9. क्या होना चाहिए? सम्बन्धित है :
(A) आदर्श विज्ञान से (B) वास्तविक विज्ञान से
(C) कला से (D) इनमें से सभी से

10. 'अर्थशास्त्र कला और विज्ञान दोनों है'—यह कथन किसका है :
(A) पीगू का (B) कोसा का
(C) रॉबिन्स का (D) कीन्स का

11. क्या है? का सम्बन्ध किससे है :
(A) आदर्श विज्ञान से (B) वास्तविक विज्ञान से
(C) कला से (D) इनमें से सभी से

12. "अर्थशास्त्रियों का कार्य अनुसन्धान एवं व्याख्या करना है न कि समर्थन अथवा निन्दा करना".....यह विचार किसने दिया?
(A) पीगू ने (B) मार्शल ने
(C) राबिन्स ने (D) फ्रेजर ने

[उत्तर : 1. (A), 2. (A), 3. (B), 4. (A), 5. (B), 6. (D), 7. (A), 8. (A), 9. (A), 10. (B), 11. (B), 12. (C).]

Scanned by PDF Scanner